Research Paper

E-ISSN NO : 2455-295X | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983
VOLUME : 11 | ISSUE : 1 | SPECIAL ISSUE JANUARY-2025

भारतीय भाषाओं की विश्व यात्रा के परिप्रेक्ष्य में गिरमिटिया साहित्य और ग्लोबल साउथ संघ

गीतांजली कोलीवाल सहायक आचार्य (हिंदी), डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्रीगंगानगर.

ABSTRACT:

'गिरमीटिया साहित्य' न केवल भारतीय प्रवासियों के संघर्षों और भावनाओं का दर्पण है बल्कि यह ग्लोबल साउथ देशों के बीच भाषा, संस्कृति, और साहित्य के माध्यम से एकता और संवाद का प्रतीक भी है। भारतीय भाषाओं की इस विश्व यात्रा में यह साहित्य एक महत्वपूर्ण कड़ी है जो भारतीय संस्कृति को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जीवंत बनाए रखती है। गिरमिटिया प्रवासियों के माध्यम से भारतीय भाषाएँ वैश्विक स्तर पर पहुँच गई है। उनकी कविताएँ, कहानियाँ व धर्म ग्रंथ नयी भौगोलिक सीमाओं में स्थानान्तरित हुए हैं। भारतीय भाषाओं की यह यात्रा केवल भौतिक रूप में ही नहीं बल्कि साहित्यिक और सांस्कृतिक रूप में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

गिरमीटिया साहित्य में 'ग्लोबल साउथ' का संदर्भ ऐसे भौगोलिक और सांस्कृतिक संदर्भों से माना गया है जो औपनिवेशिक, प्रवासन एवं श्रम व्यवस्था के अनुभवों से जुड़े हैं। गिरमीटिया मजदूर वे भारतीय लोग थे जिन्हें औपनिवेशिक काल में भारत से अनुबंध पर ले जाकर मॉरीशस, कैरेबियन, त्रिनिदाद, टोबैगो, फिजी, गुयाना, दक्षिण अफ्रीका जैसे स्थानों पर बंधुआ मजदूर के रूप में काम करवाया गया इन प्रवासियों ने अपनी सांस्कृतिक जड़ें, भाषाएँ और परंपराएँ नयी आधार भूमि पर स्थापित की और साहित्य को माध्यम बनाकर अपनी पहचान और संघर्ष को अभिव्यक्ति दी। गिरमीटिया साहित्य 'ग्लोबल साउथ' की पहचान और उसके संघर्षों को साहित्यिक रूप में उजागर करने का एक प्रभावशाली माध्यम है। गिरमीटिया साहित्य न केवल इतिहास का दस्तावेज है बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए एक प्रेरणास्रोत भी है।

KEYWORDS:

वैश्विक, व्यापार, स्थानान्तरित, एग्रीमेंट, औपनिवेशिक, भारतवंशी, प्रवासी, अनुबंध ।

परिचय

गिरमिटिया साहित्य भारतीय प्रवासी श्रमिकों के अनुभवों, संघर्षों और संस्कृतिक पहचान की एक विशिष्ट अभिव्यक्ति है। यह साहित्य भारतीय भाषाओं के वैश्विक प्रचार-प्रसार और ग्लोबल साउथ के देशों के बीच सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संवाद के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। विश्व में अनेक भाषाएँ प्रचलित है और उनका समृद्ध साहित्य भी उपलब्ध है। हिंदी भाषा का व्यवहार क्षेत्र बहुत विस्तृत है। वैश्विक स्तर पर हिंदी बोलने व समझने वालों की संख्या बहुतायत में है। उपयोग की दृष्टि से हिंदी विश्व की सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाली भाषा है। विश्व में हिंदी के प्रयोगकर्ताओं की संख्या में निरंतर वृद्धि के कारणों, परिस्थितियों और भारतीय भाषाओं की विश्व यात्रा को जानने के संबंध में कुछ आवश्यक तथ्य इस प्रकार से है-

प्राचीन काल से ही भारत का वैभव विदेशियों को आकर्षित करता रहा है। प्राचीन काल में विश्व के कोने-कोने से लोग शिक्षा के लिए भारत आते थे। भारत का समृद्ध व्यापार विदेशों से होता रहा है। भारतीय भाषाएँ विश्व के अनेक देशों में प्रचार-प्रसार पाती रहीं।

19वीं शताब्दी में ब्रिटिश उपनिवेशवादी शासको ने शर्तबंदी प्रथा के अंतर्गत भारतीय मजदूरों को विश्व के अनेक देशों में छल-प्रलोभन में फसाकर ले जाना शुरू किया। जिनमें मॉरीशस, त्रिनिदाद, टोबैगो, सूरीनाम, फिजी, गुयाना, दक्षिण अफ्रीका आदि प्रमुख है। उनमें ज्यादातर गरीब परिवार के लोग थे। अनुबंध पर जाने वाले इन मजदूरों के लिए 'गिरमिटिया' शब्द प्रयुक्त किया जाता था। 'गिरमिटिया' शब्द की उत्पत्ति 'गिरमिट' शब्द से मानी जाती है। 'गिरमिट' शब्द 'एग्रीमेंट' से निकला है, जो उन मजदूरों के जीवन संघर्ष और उनकी पीड़ा को समर्पित है। देश के बाहर हिंदी को पहुँचाने में गिरमिटिया मजदूरों की देन सराहनीय है।

भारतवंशी को गिरमिटिया बनाकर विदेश में ले जाया गया। वहाँ व्याप्त दुर्दशा तथा घोर दास्तान की स्थिति में रहने वाले भारतीय मजदूर पूर्वी उत्तरप्रदेश, बिहार, दक्षिण भारत और महाराष्ट्र के थे जो अपनी संस्कृति एवं भाषा को जीवित रखने का अटूट संकल्प साथ लेकर अपने साथ रामचरितमानस, हनुमान चालीसा, आल्हा खंड, सत्यनारायण कथा, महाभारत, गीता, सुखसागर आदि ग्रन्थों को लेकर गये। इसी के साथ वे अपनी भाषा/साहित्य और संस्कृति को भी ले गए जिससे वैश्विक स्तर पर भारतीय भाषा, साहित्य और संस्कृति का प्रसार हुआ। भारतवंशी अपने धर्म का स्वावलंबन भी निष्ठा पूर्वक करते। गोरे मालिक प्रवासी भारतीय मजदूरों में वर्ण, जाति, क्षेत्र और धर्म के आधार पर भेदभाव पैदा करने का पूरा प्रयास करते, ताकि मजदूरों में एकता कायम न हो सके परंतु उनके लाख शोषणों एवं प्रताड़नाओं के बावजूद भी वे भारतीय विपत्ति, शोषण और व्यथा को सहन करने का साहस भी लिए हुए थे।

वे भारतीय मजदूर पूजा-पाठ करते एवं जो थोड़ा बहुत पढ़े-लिखे थे, वे रामायण या चालीसा का पाठ जोर-जोर से करते जिससे कि वह भारतीय मजदूर अपनी दिनभर की थकान को आसानी से मिटा सके, साथ ही अपनी धार्मिक मान्यताओं को भी कायम रख सके। गिरमिटिया देश और अन्य देशों में सामाजिक व धार्मिक उत्थान के साथ-साथ जन कल्याण के उद्देश्य से समाज सेवक, धर्मोपदेशक व विचारक पहुँचे और विभिन्न संगठनों के माध्यम से भाषा व संस्कृति का संवर्धन किया। समय के साथ शिक्षा व ज्ञान-विज्ञान का प्रसार हुआ और ऐसे में भारतीय शिक्षा, नौकरी, व्यवसाय आदि उपक्रमों के माध्यम से विदेशों की यात्रा करने लगे और उन सभी ने हिंदी भाषा और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में योगदान दिया।

आज गिरमिटिया देशों के अलावा विश्व के अनेक देशों में हिंदी बोलने, समझने, पढ़ने वाले बहुतायत है। आज लगभग 150 से अधिक देशों में हिंदी का अध्ययन व अध्यापन प्रारंभिक स्तर से लेकर विश्वविद्यालय में अनुसंधान स्तर तक हो रहा है। अमेरिका, जापान, फ्रांस, सिंगापुर, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, चीन, न्यूजीलैंड, कोरिया, थाईलैंड, हंगरी, जर्मनी, कनाडा, नेपाल आदि देशों में हिंदी के शिक्षण की पर्याप्त सुविधाएँ उपलब्ध है। विदेशी देशों में हिंदी केवल मात्र अध्ययन-अध्यापन व व्यावहारिक प्रयोग तक ही सीमित नहीं है बल्कि हिंदी साहित्य की समृद्ध परंपरा भी विद्यमान है। इन देशों में साहित्य की सभी विधाओं में हिंदी का सृजनात्मक साहित्य रचा गया है और रचा जा रहा है। विदेश में जो लोग हिंदी में लेखन कार्य कर रहे हैं उन्हें प्रवासी लेखक माना जाता है और उनके साहित्य को प्रवासी हिंदी साहित्य कहा जाता है।

भारतेत्तर देशों में हिंदी के अंतरराष्ट्रीय स्वरूप को विस्तार प्रदान करने में प्रवासी साहित्यकारों ने सेतु का काम किया। "सभी प्रवासी भारतीय विदेश में अपनी भाषा की रक्षा, सुरक्षा एवं भषा के प्रति सचेत हैं, यही कारण है कि सर्वत्र विदेश में जहाँ-जहाँ भारतीय, प्रवासी के रूप में गए हैं वे हिंदी बोलने का प्रयत्न करते हैं और अपनी भाषा एवं संस्कृति पर उन्हें गर्व है। वे अपनी अगली पीढ़ी को हिंदी सीखाना चाहते हैं क्योंकि वही हिंदी उन्हें विदेशों में जोड़ने वाली ताकत है।"[1]

प्रवास में निवास कर रहे भारतवंशी अंग्रेजी नीति के शिकार होने के साथ शोषित, पीड़ित,

प्रताड़ित व अपमानित होते हुए और औपनिवेशिक नीतियों के दंश को झेलते हुए भी अपनी भाषागत एकता, संस्कृति व मानवीय मूल्यों को बचाए रखने में सफल सिद्ध हुए हैं।

आज प्रवासी हिंदी साहित्य के अंतर्गत उत्कृष्ट कोटि की कविता, कहानी, उपन्यास, व्यंग्य, यात्रावृतांत, संस्मरण आदि उपलब्ध है और भारत के विभिन्न विश्वविद्यालय में तो प्रवासी साहित्य को शैक्षिक पाठ्यक्रमों में भी स्थान मिल रहा है। गिरमिटिया देशों सूरीनाम, त्रिनिदाद, टोबैगो, फिजी और मॉरीशस में रामायण व गीता पूजनीय ग्रंथ है और इसका महत्व यहाँ के लोगों के लिए वही है जो प्रत्येक भारतीय के जीवन में है।

गिरमिटिया मजदूरों के देश का हिंदी साहित्य

सूरीनाम में सप्तरंगी संस्कृति है। सात जातियों- अमर इंडियन, अफ्रीकी, चीनी, डच, हिंदुस्तानी, इन्डोनेशियाई, लेबनीज लोग यहाँ रहते हैं। यहाँ की बोलचाल की भाषा 'सरनामी हिंदी' कहलाती है, जो विभिन्न भाषाओं की शब्दावलियों से बनी है और जो परिनिष्ठित हिंदी से भिन्न है। यह भाषा अवधी, मगही, मैथिली, भोजपुरी, ब्रज तथा अन्य बोलियों का सम्मिलित रूप है। सरनामी ने हिंदी को वैश्विक धरातल दिया है और यह सरनाम के भारतीयों की अभिव्यक्ति की भाषा बनी है।

सूरीनाम में अनेक संस्थाएँ हैं जो हिंदी भाषा के अध्ययन व अध्यापन से जुड़ी है साथ ही कुछ हिंदी प्रेमी भारत आकर हिंदी पढ़-लिखकर परिनिष्ठित हिंदी का प्रयोग भी लेखन में कर रहे हैं। सूरीनाम में अनेक लोग हिंदी में सृजनरत है।

सूरीनाम के कवि - आशा राजकुमार, कारमेल जगलाल, चंद्रमोहन रंजीत सिंह, चित्रा गयादीन, नाराइन सिंह 'सुभाग', जीत नाराइन, तेज प्रताप खेदू, देवानंद शिवराज, धीरज कन्धई, बिहारी लाल कल्लू, मुंशी रहमान खान, राजमोहन, राज रामदास, रामदेव महाबीर, रामदेव रघुबीर, लक्ष्मी प्रसाद बलदेव, संध्या भग्गू, सुशीला सुक्खु, सुशीला बलदेव मल्हू, हरिदेव सहतू आदि है।

कैरेबियन द्वीप **त्रिनिदाद एवं टोबैगो** में भारतीय गिरमिटिया मजदूरों का आगमन हुआ। ये अपने साथ रामचरितमानस व हनुमान चालीसा की कुछ बीज पंक्तियाँ मन में समेटे 3 माह की कठिन यात्रा के बाद पहुँचे। जहाज में एक साथ सफर के कारण अलग-अलग जाति-धर्म के लोग जहाजी बन गए और आपस में भोजपुरी, अवधी, मिश्रित हिंदी का प्रयोग करते रहे, जो किसी न किसी रूप में जीवित रही। त्रिनिदाद का सामाजिक ढांचा भारतीय समाज से कई मायनो में समान है यहाँ मनाये जाने वाले सभी त्योहार, तौर-तरीके, खान-पान, रहन-सहन आदि में भारतीयता की झलक देखने को मिलती है। उदाहरणार्थ- यहां की सड़कों, चोराहों, संस्थानों के नाम ठेठ भारतीय हैं जैसे- दुर्वासा रोड, रमजान एवेन्यू, पतिराम रोड, दिल्ली स्ट्रीट, कोलकाता स्ट्रीट, लखनऊ स्ट्रीट, पटना स्ट्रीट, गांधी आश्रम, कबीर चौरा मठ, स्वामी विवेकानंद स्कूल आदि। त्रिनिदाद में हिंदी के प्रति लोगों का विशेष लगाव है पर उन्हें हिंदी के व्यवहारिक प्रयोग के लिए वह प्रोत्साहन नहीं मिल पाया जिसकी उन्हें आवश्यकता है।

फिजी एक ऐसा देश है जहां लगभग 47% भारतीय मूल के निवासी है और आपसी व्यवहार में हिंदी के जिस रूप का प्रयोग करते हैं वह 'फिजीबात' के नाम से जानी जाती है। फिजीबात हिंदी, भोजपुरी, फ्रेंच और डच भाषा का मिश्रित रूप है। हिंदी के प्रचार-प्रसार में गिरमिटिया मजदूरों की महत्वपूर्ण भूमिका है। फिजी में हिंदी लेखन की समृद्ध परंपरा है। फिजी में हिंदी साहित्य की मूल संवेदना गिरमिटिया जीवन से जुड़ी है जो स्वदेश, स्वभाषा व स्वसंस्कृति की रक्षा पर आधारित और प्रतिस्थापित है। फिजी के महाकवि पं. कमला प्रसाद मिश्र ने अपने काव्य में गिरमिटिया जीवन की यातनाओं, विभीषिकाओं और शोषणों के प्रति आक्रोश को अभिव्यक्ति दी है। उनकी 'एक गिरमिटिया मजदूर' कविता में मजदूर के स्वाभिमान के चित्रण का दृष्टांत रूप इस प्रकार है-

एक गिरमिटिया छुरी लेकर बाहर निकल रहा था,

क्रोध में उसके नयन से अश्रु का सागर बहा था।

फिजी में रेडियो ने भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी, जिसमें हिंदी के कार्यक्रम नियमित रूप से प्रसारित होते रहते। सन 1997 के संविधान के अनुसार अंग्रेजी और फिजीयन के साथ हिंदी को भी प्रमुख राष्ट्रीय भाषा के रूप में संसद की मान्यता प्राप्त भाषाओं में रखा गया।

मॉरीशस में हिंदी के अंतरराष्ट्रीय स्वरूप को देखा जा सकता है। मॉरीशस में भारतीय मूल के 68% प्रवासी है। गिरमिटिया मजदूरों की कई पीढ़ियाँ मॉरीशस के सर्वोच्च पदों पर आसीन रही। मॉरीशस में लगभग सभी विधाओं में साहित्य का सृजन हो रहा है और हिंदी जगत में उनको पर्याप्त स्वीकृति भी मिली है।

यहां के साहित्यकारों में ब्रजेन्द्र भगत मधुकर मॉरीशस के 'राष्ट्र कवि' कहे जाते हैं। उनके काव्य में 'हिंदू-हिंदी-हिंदुस्तानी' के साथ मॉरीशस का इतिहास, एकता, स्वतंत्रता आंदोलन और देश के विकास के भाव-बोध की प्रमुखता है। यहाँ के साहित्यकार अपनी भाषा हिंदी के प्रति निष्ठा को बचाए हुए है। हिंदी के प्रति उत्कृष्ट लालसा को दर्शाते हुए मॉरीशस के कवि मुनीश्वर लाल चिंतामणि के शब्द-

"उस आदमी से जाकर कहो कि

मेरी हिंदी भाषा

एक ऐसी खूबसूरत चीज है

जिसनें मेरी संस्कृति को

अभी बचाए रखा है....[2]

मॉरीशस में हिंदी की पहली कहानी के रूप में सूर्यप्रसाद मंगर भगत की कहानी 'विनाश' (1934), बली मोहम्मद की 'अनबोलती चिड़िया' तथा पं. जयप्रकाश शर्मा की कहानी 'तारा' (1934) उल्लेखनीय है। 'वसंत' पत्रिका के संपादन के 20 वर्षों का समय मॉरीशस की हिंदी कहानी का स्वर्ण युग कहा जा सकता है।

मॉरीशसवासी भारतवंशी अभिमन्यु अनत के शब्दों में- "मॉरीशस की हिंदी अपनी माटी की सौंधी खुशबू की गंध को आत्मसात करके ही अपना एक निजी स्थान बना सकी है और हिंदी के शब्द सरोवर में अपने हिस्से की चंद बूंदे जोड़ पाई है।"[3]

अभिमन्यु अनत मॉरीशस के प्रमुख कथाकार है। इन्होंने हिंदी में 5 कहानी-संग्रह, 32 उपन्यास और नाटक लिखे, जिसमें मॉरीशस के जीवन के अतीत, वर्तमान और भविष्य को यथार्थ के रूप में अभिव्यक्ति दी गई है। अनत ने अपने देश के गूंगे एवं चीखते इतिहास को 'लाल पसीना', 'गांधी जी बोले थे' तथा 'और पसीना बहता रहा' उपन्यासों में प्रस्तुत किया है। इनके 'लाल पसीना' उपन्यास में अंग्रेजों के प्रलोभन में आकर भारत से मॉरीशस पहुँचे गिरमिटिया मजदूरों के संघर्ष का चित्रण है। मालिकों के अमानवीय अत्याचारों व भोले असहाय लोग है, जिन्होंने अपने खून पसीने से बंजर द्वीप को समृद्धि की ऊँचाइयों तक पहुँचाया और अपनी भाषा, संस्कृति व धर्म को केंद्र में रखा।

अभिमन्यु अनत ने 'लाल पसीना' में लिखा है- "जिस दिन गोरे सरदारों की ड्यूटी की बदली की जाती उस दिन सारे भारतीय मजदूर खुलकर बातें कर पाते।" 'गांधी जी बोले थे' उपन्यास का मूल तथ्य गांधी जी द्वारा मॉरीशस यात्रा में भारतीय मजदूरों को अपने अधिकारों के लिए सचेत करना और राजनीति गतिविधियों में सक्रिय रखने के लिए प्रोत्साहित करना रहा। 'और पसीना बहता रहा' उपन्यास में मॉरीशस के भारतीय मूल के पं. रामनारायण के जन-आंदोलन पर आधारित कथा है जिसमें विद्यमान इतिहास पुरुष अस्मिता और संघर्ष की मिसाल कायम करते है।

रामदेव धुरंधर का छह खंडों में प्रकाशित 'पथरीला सोना' मॉरीशस के हिंदी साहित्य का अनुपम उपन्यास है, इसमें लगभग 300 पात्रों के साथ कथा का संयोजन, विस्तार, गांभीर्य और अद्भुत सृजनात्मक कला का परिचय प्राप्त होता है। रामदेव धुरंधर हिंदी साहित्य में लघु कथा लेखन के अग्रणी लेखक है।

मॉरीशस में हिंदी नाटक तथा रंगमंच का उद्भव और विकास 20वीं शताब्दी के आरंभ में हुआ। 19वीं सदी के अंतिम चरण में 'रामलीला', 'कृष्ण लीला' आदि धार्मिक नाटकों की धूम थी। मॉरीशस में जब बंबई की नाटक कंपनियों ने जाना शुरू किया तो खड़ी बोली का विकास और रंगमंच की उन्नति हुई।

इस प्रकार वैश्विक स्तर पर हिंदी को समृद्ध करने में गिरमिटिया मजदूरों और उनके वंशजों का समर्पण और साहस सदैव स्मरणीय रहेंगा। भारत से बाहर भी हिंदी साहित्य का सृजन हुआ और हो रहा है। विशेष तौर पर जब हम गिरमिटिया देशों में हिंदी के संबंध में बात करते हैं तो पाते हैं कि इन देशों में हिंदी के प्रति लोगों में जो सम्मान और आदर का भाव है वह अन्य देशों से कुछ अलग ही है। सभी गिरमिटिया देशों में विपुल हिंदी के सृजनात्मक साहित्य के भंडार को हिंदी साहित्येतिहास में शामिल कर उचित सम्मान दिए जाने की आवश्यकता है ताकि उनका सम्यक मूल्यांकन हो सके।

ग्लोबल साउथ संघ

'ग्लोबल साउथ संघ' के गठन का प्रभाव भारतीय कला और संस्कृति पर देखा जा सकता है। ग्लोबल साउथ संघ का उद्देश्य वैश्विक दक्षिण देशों भारत, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका के बीच आर्थिक, सांस्कृतिक और सामाजिक सहयोग को बढ़ावा देना है। 'ग्लोबल साउथ संघ' भारत के साथ-साथ अन्य दक्षिणी देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान में वृद्धि कर भारतीय नृत्य, संगीत, चित्रकला, सिनेमा और साहित्य को नए दर्शकों तक पहुँचाने में सहायक होगा। 'ग्लोबल साउथ संघ' की व्यापारिक और सांस्कृतिक साझेदारी भारतीय कार्यक्रमों और शिल्पकारों को नए बाजार उपलब्ध कराकर, भारत की पारंपरिक कला व शैलियों जैसे- पेंटिंग, बांधनी और खादी उत्पादों के पुनर्जीवन में सहायता करती है। इससे स्थानीय शिल्प और हस्तशिल्प को प्रोत्साहन मिलता है।

'ग्लोबल साउथ संघ' समानता और सांझेदारी की भावना को प्रोत्साहित कर सांस्कृतिक संबंधों को सुदृढ़ करता है। भारतीय और क्षेत्रीय सिनेमा उद्योग ग्लोबल साउथ देशों में लोकप्रिय हो सकता है। ग्लोबल साउथ संघ द्वारा भारतीय कला और संस्कृति पर आधारित अध्ययन और अनुसंधान को प्रोत्साहन मिलता है, जिसके द्वारा ग्लोबल साउथ संघ विभिन्न देशों के शिक्षण संस्थानों के साथ साझेदारी करता हुआ भारतीय कला के क्षेत्र में नवीन दृष्टिकोण विकसित करता है।

'ग्लोबल साउथ संघ' आधुनिकता और पारंपरिकता के बीच संतुलन बनाए रखने में मददगार साबित हुआ है। यह भारतीय संस्कृति को वैश्वीकरण के प्रभाव से बचाने और उसकी विशिष्ट पहचान को बनाए रखने के सुअवसर भी उपलब्ध करवाता है। ग्लोबल साउथ संघ के सदस्य देशों के साथ पर्यटन को प्रोत्साहन मिलने के कारण भारत के सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक स्थलों पर विदेशी पर्यटनों की संख्या में भी बढ़ोतरी हुई है।

ग्लोबल साउथ और गिरमिटिया साहित्य के बीच संबंध

गिरमिटिया साहित्य ग्लोबल साउथ के देशों में उपनिवेशवाद के संघर्ष और शोषण की कहानी को व्यक्त करता है, जिसमें गिरमिटिया मजदूरों के साथ किए गए दुर्व्यवहार के साथ उनकी सामाजिक-आर्थिक समस्याओं को प्रमुखता से उठाया गया है।

गिरमिटिया साहित्य में भारतीय प्रवासियों के सांस्कृतिक मूल्य, परंपराओं और धर्म को नयी भूमि में बनाए रखने के प्रयासों का वर्णन भी मिलता है।

गिरमिटिया साहित्य ग्लोबल साउथ के देशों से जुड़ा प्रवासी अनुभवों का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। ग्लोबल साउथ के देशों के साहित्य में गिरमिटिया साहित्य की कहानियाँ उपनिवेशवाद के विरोध-प्रतिरोध और सामाजिक व आर्थिक पुनर्निर्माण के गहरे प्रभाव को परिलक्षित करती है।

ग्लोबल साउथ और गिरमिटिया साहित्य का प्रभाव

गिरमिटिया साहित्य ग्लोबल साउथ के देशों के लोगों को उनके सांझा औपनिवेशिक इतिहास के बारे में जागरूक करता है। गिरमिटिया मजदूरों की कहानियाँ ग्लोबल साउथ के देशों के लिए प्रेरणास्रोत है जो यह दर्शाता है कि कैसे संघर्ष के बावजूद भी सांस्कृतिक और सामुदायिक पहचान को बचाया जा सकता है। यह गिरमिटिया मजदूरों के संघर्ष और ग्लोबल साउथ के देशों की प्रेरणा का प्रतीक है।

तुलसी दयाल सिंह (त्रिनिदाद), शिवदयाल सत्यानंद (फिजी), कल्याण प्रसाद शर्मा (मॉरीशस) प्रमुख गिरमिटिया लेखक हैं। इनकी रचनाओं में गिरमिटिया प्रवासियों के संघर्षों व सांस्कृतिक आदान-प्रदान की झलक दिखाई देती है।

गिरमिटिया साहित्य की विशेषताएँ

गिरमिटिया साहित्य में आत्मकथात्मक स्वर प्रमुख होता है। जिसमें मजदूरों के कठिन श्रम, शारीरिक शोषण और सामाजिक अलगाव की कहानियाँ मौजूद होती हैं। गिरमिटिया साहित्य में भोजपुरी, अवधी और अन्य भारतीय भाषाओं का उपयोग होता है जो प्रवासी समुदायों के सांस्कृतिक व भाषायी संघर्ष की गाथा को व्यक्त करता है। गिरमिटिया साहित्य में प्रवासियों के जीवन में धर्म और समुदायिकता की भूमिका को साहित्य में विस्तृत रूप से चित्रित किया गया है।

निष्कर्ष-

भारतीय भाषाओं की विश्व यात्रा में गिरमिटिया साहित्य एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह साहित्य भारतीय प्रवासियों द्वारा अपनी भाषा और सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने और नये देशों में उन्हें अनुकूलित करने की प्रक्रिया को दर्शाता है। गिरमिटिया मजदूरों ने भारतीय भाषाओं को अपने साथ विश्व के विभिन्न हिस्सों में पहुँचाया। गिरमिटिया साहित्य उन मजदूरों की संघर्ष गाथा और उनकी सांस्कृतिक पहचान का एक बहुमूल्य दस्तावेज है।

प्रवासी साहित्यकारों ने कविताओं और कहानियों के माध्यम से अपने अनुभवों और संघर्षों को साझा किया। गिरमिटिया साहित्य न केवल भारतीय भाषाओं के वैश्विक विस्तार को दर्शाता है बल्कि किस प्रकार प्रवासी समुदायों ने अपनी भाषायी और सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित व सरक्षित करते हुए वैश्विक मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज की है उसे भी उजागर करता है। 'ग्लोबल साउथ संघ' भारतीय कला और संस्कृति के लिए नवीन द्वार खोलता है जो न केवल भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण और प्रचार-प्रसार में सहायक है, बल्कि इसे वैश्विक मंच पर एक नई पहचान भी दिलाएगा। ग्लोबल साउथ और गिरमिटिया साहित्य उपनिवेशवाद, प्रवास और सांस्कृतिक संघर्ष की जड़ों से जुड़े होने के कारण उन देशों व क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करता है जो ऐतिहासिक रूप से औपनिवेशिक उत्पीड़न और विकास की चुनौतियों से गुजरते हैं। ग्लोबल साउथ व गिरमिटिया साहित्य दोनों के बीच गहरा संबंध है, यह संबंध भारतीय प्रवासियों के जीवन-संघर्षों को वर्णित करता है। गिरमिटिया साहित्य और ग्लोबल साउथ दोनों ही औपनिवेशिक शोषण और प्रवास की कहानियों से गहराई से जुड़े हैं। गिरमिटिया साहित्य ग्लोबल साउथ की संस्कृति, इतिहास और संघर्षों को न केवल दस्तावेज रूप देता है बल्कि उन सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक मुद्दों की ओर ध्यान आकर्षित करता है जो आज भी प्रासंगिक है। यह साहित्य इन देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान और एकजुटता को बढ़ावा देने का एक प्रभावी माध्यम है।

REFERENCES

1. विमलेश कांति वर्मा, गगनांचाल, वर्ष 40, अंक- 1-2, जनवरी-अप्रैल 2017, पृष्ठ संख्या-7

2. मुनीश्वर लाल चिंतामणि, मेरी हिंदी, गगनांचल, वर्ष- 40, अंक- 1-2, जनवरी-अप्रैल 2017, पृष्ठ संख्या- 7

3. श्री चित्रा वी.एस. , उपन्यासकार अभिमन्यु अनत, पृष्ठ संख्या 49

4.अभिमन्यु अनत, 'लाल-पसीना' पृष्ठ संख्या 125